

परामर्श की विशेषताएँ

(Characteristics of Counselling)

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन और विश्लेषण के परिणामस्वरूप परामर्श के स्वरूप या प्रकृति (Nature) में निम्नलिखित विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं—

- (1) परामर्श दो व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित एक विशेष प्रक्रिया है।
- (2) परामर्श एक प्रशिक्षित व्यक्ति का व्यावसायिक कार्य है।
- (3) परामर्श प्रक्रिया का उद्देश्य परामर्शार्थी को अपनी समस्याएँ स्वतन्त्र रूप से हल करने योग्य बनाना है।

(4) परामर्शदाता तथा परामर्शप्रार्थी के मध्य विचार-विमर्श के अनेक साधन हो सकते हैं।

(5) प्रत्येक परामर्श साक्षात्कार निर्मित होता है।

(6) परामर्श समस्त निर्देशन कार्यक्रम का सक्रिय भाग है।

(7) परामर्श की प्रक्रिया अधिगम केन्द्रित (learning oriented) होती है।

(8) परामर्श में परस्पर आदर एवं सहानुभूति की भावना होती है।

(9) परामर्श व्यक्ति को चयन करने तथा उस पर अमल करने में सहायता करता है।

(10) परामर्श में अन्तःक्रिया (Interaction) निहित होती है जिसमें परामर्शदाता, परामर्श द्वारा दूसरे व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए सकारात्मक योगदान देता है।

(11) परामर्श वैयक्तिक सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया है। कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़कर इसे सामूहिक रूप में सम्पादित नहीं किया जाता है।

(12) परामर्शदाता सम्पूर्ण परिस्थितियों के आधार पर समायोजन हेतु प्रार्थी को जानकारी देता है और उसकी सहायता भी करता है।

(13) परामर्श की प्रक्रिया मधुर एवं सहयोगात्मक वातावरण में ही सम्भव है।

(14) परामर्श में शिक्षण की भाँति निर्णय नहीं किया जाता है अपितु परामर्शप्रार्थी स्वयं निर्णय लेता है।

(15) परामर्श में प्रार्थी की समस्या व्यक्तिगत होती है। मानसिक रूप से वह स्वस्थ नहीं होता है इसीलिए उसे परामर्श की आवश्यकता होती है।

(16) परामर्शदाता का मुख्य उद्देश्य प्रार्थी में उत्तरदायित्वों को वहन करने में सहायता करना तथा हीन-भावना विकसित होने से रोकना है।

(17) परामर्श में परामर्शदाता एवं प्रार्थी दोनों का समान महत्व होता है।

(18) परामर्श परामर्शदाता की भविष्यवाणी की उपयुक्तता पर आधारित होता है।

(19) प्रार्थी की भावनाओं के अनुसार परामर्श का स्वरूप भी बदला जा सकता है।

(20) परामर्श शब्द का प्रयोग शिक्षण, मनोचिकित्सा आदि के स्थान पर नहीं किया जा सकता है।

(21) परामर्शदाता के सफल ठोस अनुभव प्रार्थी के मनोवैज्ञानिक पक्ष को समझने में सहायक होते हैं।

(22) प्रत्येक परामर्शदाता को अपनी प्रक्रिया का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

(23) परामर्श के द्वारा व्यवहार को सीखा और सुधारा जा सकता है। व्यक्ति वातावरण की शक्तियों का मोहरा नहीं है, उसमें कुछ सीमा तक निर्णय लेने और उसे बदलने की योग्यता होती है और इन परिवर्तनों के निर्णय हेतु उसे परामर्श की आवश्यकता होती है।

(24) परामर्श प्रार्थी को जीवन में समायोजन बनाये रखने हेतु नयी-विधियों को सीखने में मदद करता है।